# तेरापंथ का

# इ
# ति
# हा
# स

# बोलता है।

संकलन कर्त्ता :

**रूपचन्द चोरड़िया जैन**

प्रकाशक :

**सोहनलाल घोड़ावत**

लाडनूँ ( राजस्थान )

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# तेरापन्थ का इतिहास बोलता है

संकलन कर्त्ता :

**रूपचन्द चोरड़िया जैन**

लाडनूँ ( राजस्थान )

प्रकाशक :

**सोहनलाल घोड़ावत**

लाडनूँ ( राजस्थान )

प्रथम संस्करण ३००० ]   [ मूल्य २५ न० पै०

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

मुद्रक :
महालचन्द बयेद
ओसवाल प्रेस
१८६, जमुनालाल बजाज स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

वीर निर्वाणाब्द २४९१

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# अपने विषय में

काल के तीन चरण होते हैं—अतीत, अनागत और वर्तमान। अधिकांशतः वर्तमान के सहारे ही व्यक्ति गति करता है। निकट अतीत और निकटतम भविष्य स्थूल वर्तमान के ही अंग हैं। साधारण मनुष्य स्थूल वर्तमान को अपनी स्मृति से पकड़ लेता है पर दूर भविष्य तक उसकी दौड़ नहीं होती। इसीलिए उसके प्रति अनेक जिज्ञासाएँ उभरती रहती हैं। इसलिए उसकी तृप्ति के लिए ज्योतिषियों का द्वार खट-खटाया जाता है। अतीत भी वर्तमान की तरह स्पष्ट नहीं होता। लम्बे काल की धूलि से अर्द्ध ढका-सा रहता है। इसीलिए उसके प्रति उत्सुकता जागृत होती है। यह व्यक्ति का स्वभाव होता है कि वह खुले की अपेक्षा ढके को देखने का अधिक प्रयास करता है।

तेरापंथ-संघ शताब्दी के दो विश्रामों को लांघकर आगे चला गया। प्रत्येक चरण के पीछे इतिहास बोलता है। संघ के साथ लाखों व्यक्तियों का जीवन जुड़ा हुआ है। सबका संकलन करना असम्भव कार्य है, क्योंकि जिन घटनाओं को काल ने कवलित कर लिया वे अब अलभ्य हैं। जो लभ्य हैं उनका संकलन ही परिश्रम साध्य है। तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर प्रकाशित प्रगति विवरण इस दिशा में प्रकाश देता है। उसमें से मैंने कुछ सामग्री का संचय किया। आचार्यश्री जब ज्येष्ठ मास में लाडनूँ में पधारे तो घोड़ावत भवन में चार दिन बिराजे। वहां मोटेज के रूप में उनका प्रयोग किया। इससे लोगों में आकर्षण बना रहा। इसके बाद वर्षावास बिताने के लिए आचार्यश्री आषाढ़ शुक्ला १० ( वि० सं० २०२० ) को लाडनूँ पधारे। उस समय उनका उपयोग किया गया। दर्शकों का आकर्षण और बढ़ता गया। आचार्यश्री के मन को भी बहुत भाया। इस प्रेरणा से मुझे बल मिला और मैंने अधिक तथ्य बाहर लाने का प्रयास

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किया। दूर-दूर से आने वाले तथा निकट के यात्रियों ने तो उसकी प्रतिलिपियाँ करनी प्रारम्भ कर दी। जनता की उत्कट भावना देख मैंने उन लघु-संचयों को संग्रह का रूप दिया है जो आपके सामने प्रस्तुत है।

आचार्यश्री तुलसी के पावन चरणों में मैं श्रद्धा से अवनत हूँ, जिनकी प्रेरणा से मैंने इस दिशामें प्रयास किया है। मुनिश्री श्रीचन्द्रजी 'कमल' का भी कृतज्ञ हूँ जिनका इस कार्य में बहुत सहयोग मिला है। मुनिश्री सोहनलालजी (सरदारशहर), सागरमलजी (लाडनूँ), मधुकरजी, सुखलालजी, दुलहराजजी और साध्वीश्री मोहनांजी (राजगढ़), व श्री लिखमीचन्दजी डूंगरवाल का भी आभारी हूँ जिनसे मुझे सामग्री-संग्रह में सहयोग मिला है। इस प्रकाशन का कार्य-भार श्री सोहनलालजी घोड़ावत लाडनूँ निवासी ने अपने ऊपर लिया है, अतः वे शत-शत धन्यवाद के पात्र हैं।

लाडनूँ
वि० सं० २०२०
कार्तिक शुक्ला १५

रूपचन्द चोरड़िया जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# लाडनूं-तेरापंथ का ऐतिहासिक स्थल क्यों ?

१—तेरापंथ के प्रवर्त्तक आचार्यश्री भिक्षु ने वि० सं० १८३६ में सर्व प्रथम पद-धूलि से स्पर्श किया।

२—तृतीयाचार्यश्री ऋषिरायजी ने वि० सं० १८६८ और १६०६ का चातुर्मास यहां बिताया।

३—चतुर्थ आचार्यश्री जीतमलजी ( जयाचार्य ) ने वि० सं० १६१४ में चारित्रात्माओं (साध्वियों) के स्थिरवास की स्थापना की।

४—श्री जयाचार्य ने सात वर्षावास ( वि० सं० १६००, १६१५, १८, २७, ३२, ३३, ३४ ) इस नगरी को दिए।

५—पंचमाचार्यश्री मघवागणी का दीक्षा-संस्कार यहाँ सम्पन्न हुआ और उनका एक चातुर्मास ( वि० सं० १६४६ ) भी।

६—षष्टमाचार्यश्री माणकगणी ने दीक्षा-मन्त्र यहीं स्वीकार किया।

७—सप्तमाचार्य श्री डालगणी अपनी अनुपस्थिति में भी संघ द्वारा यहीं आचार्य चुने गए। आगे चलकर ( वि० सं० १६५५, ६२, ६५, ६६ ) के चार वर्षावासों में यहां प्रवास किया और उनका स्वर्गवास भी यहीं हुआ। उनका समाधि स्थल (चबूतरा) भी अतीत का इतिहास दोहराता है।

८—अष्टमाचार्य श्री कालूगणी ने तीन वर्षावास ( वि० सं० १६६६, ७०, ८६ ) यहां की जनता के बीच बिताए।

६—अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्त्तक नवमाचार्य श्री तुलसीगणी के जन्म और दीक्षा-संस्कार का गौरव इसी पावन भूमि को उपलब्ध है। उनके दो चातुर्मास (वि० सं० १६६७, २०२०) का लाभ भी यहाँ के लोगों को मिला।

यह नगरी तेरापंथ के आठ आचार्यों (द्वितीयाचार्यश्री भारमलजी को छोड़ ) के इतिहास-स्थल को अपने में समेट कर समृद्ध बन गई है। एक शताब्दी से सतत चारित्रात्माओं की उपस्थिति से यह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तीर्थ-स्थल बन गया है। यह नगर का सौभाग्य है कि प्रत्येक प्रभात में जन-जन को पवित्रात्माओं के पुण्य-दर्शन प्राप्त होते हैं।

## तेरापंथ को लाडनूँ की ओर से उपहार—

| नाम | साधु | साध्वी |
|---|---|---|
| आचार्यश्री ऋषिरायजी को | १ | १५ |
| आचार्यश्री जयाचार्य को | २ | १३ |
| आचार्यश्री मघवागणी को | ० | १ |
| आचार्यश्री माणकगणी को | ० | २ |
| आचार्यश्री डालगणी को | ० | ७ |
| आचार्यश्री कालूगणी को | ८ | २७ |
| आचार्यश्री तुलसीगणी को | १५ | ३६ |
| | २६ | १०४ |

## यह वह लाडनूँ है, जहाँ....

२६ पुरुष और १०४ स्त्रियों ने तेरापंथ की दीक्षा स्वीकार की।

११ साधु और २०० साध्वियों ने समाधि-मरण प्राप्त किया।

स्थिरवास की स्थापना के बाद (ढाई दिन के सिवा) कभी चारित्रात्मा से खाली नहीं रहा।

आचार्य भिक्षु १८३६ में सिर्फ एक रात ही रामदेवरा में विराजे।

## ऐसे ही श्रावक थे—

मुनिपत चोपड़ा (जयपुर) अपने परिवार में गोद गए हुए थे। माताकी स्वीकृति से ११ वर्ष की अवस्था (वि० सं० १९२०) में वे दीक्षित हुए। उनके मूल दादा को यह स्वीकृत नहीं हुआ। वे आवेश में आ गए और विरोध का वातावरण बनाया। शिकायत लेकर जोधपुर गए। वहां दीवान विजयसिंहजी मेहता से मिले। उस समय मेहताजी और बादरमलजी भण्डारी का परस्पर मनमुटाव चल रहा था। तेरापंथ के विरुद्ध की बात उनके पक्ष को प्रबल बनाती थी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसलिए उसे महाराज श्री तख्तसिंहजी के पास ले गए। अपनी सिफारिश पर महाराज ने आदेश निकाल दिया कि श्री मुनिपत और दीक्षा देनेवाले आचार्य जीतमलजी को गिरफ्तार कर लिया जाय। वारंट देकर घुड़सवारों को वहां से भेज दिया।

शाम को दीवानखाने से श्री बादरमलजी भण्डारी प्रतिदिन की तरह अपनी गोष्ठी में आए और पूछा कि आज नई खबर क्या है? झट एक भाई बोल उठा—नई खबर यह है कि आपके गुरु को पकड़ने के लिए आदमी भेज दिए गए हैं। भण्डारी जी समझ न सके। फिर पूछा—क्या यह सच है? उत्तर मिला—आप तो अभी सोए हुए हैं। सिपाही तो दोपहर को ही चले गए। उसी क्षण वे घोड़े से उतरे। अपने नियम के अनुसार नवकार माला का जाप किया। घोड़े का मुँह वापस महलों की ओर कर दिया। द्वारपाल से कहा—महाराजा को निवेदन करो मैं दर्शन करना चाहता हूं। वह पहले तो हिचकिचाया पर आखिर उनका आदेश मान रनिवास में पहुंचकर निवेदन कर दिया। महाराज ने उत्तर दिया, बादर यहां से अभी तो गया है उसे कहदो कल मिल लेंगे। उस समय महाराजा अन्तःपुर (रणवास) की पोशाक में थे। द्वारपाल ने उत्तर सुनाया तो भण्डारीजी को शान्ति नहीं हुई। वे मिलने के लिए उतावले हो रहे थे। द्वारपाल से फिर कहा—वापस निवेदन करदो कल किस से मिलेंगे? अगर बादरिया कल जियेगा तो मिलेगा? द्वारपाल सकुचाया। दूसरी बार जाने से इन्कार कर दिया। भण्डारीजी बोले—मेरी आंखों के पट्टी बांध दो, मैं भीतर जाऊँगा। यह बात सुनकर वह पोलिया (द्वारपाल) घबराया और वह भीतर वापस गया। महाराजा ने आज्ञा दे दी। भण्डारीजी भीतर गए और बोले आपने अनर्थ कर दिया। महाराजा समझ न पाए। जिज्ञासा की कि क्या हुआ? वे बोले आपने सच्चे साधुपर वारंट निकाल दिया। महाराजा ने कहा—मुझे बताया गया कि मोडों की जमात आई है, जो बच्चों को मूँड़ते हैं। भण्डारीजी ने स्थिति स्पष्ट की तब महाराजा बोले—तुम आदमी भेज दो और उस आदेश को रद्द कर दो। भण्डारीजी ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय का लाभ उठाया। अपनी दूरदर्शिता के कारण दावात, कलम और कागज साथ ले गए थे। उसी समय लिखकर छाप लगाकर वापस आ गए। अपने पुत्र को एक साँड़ (ऊँटनी) पर बैठाकर लाडनूँ की ओर भेज दिया। इधर लाडनूँ में दुलीचन्दजी दूगड़ ने मुनिश्री मुनिपत को गिरफ्तार न होने देने का निश्चय किया। भीतर मुनिश्री थे और बाहर सैंकड़ों भाइयों के साथ स्वयं सजकर बैठ गए। सब आदेश लेकर आने वालों की प्रतीक्षा में थे। संयोगवश घुड़सवार बीच में किसी जीमनवार में रुक गए और भण्डारीजी का पुत्र दूसरा आदेश लेकर पहले पहुँच गया। घुड़सवारों को खाली हाथ लौटना पड़ा। विरोधियों का षड़यन्त्र विफल गया। संभव है इस घटना के बाद ही तेरापंथ में दीक्षा देते समय मौखिक स्वीकृति के साथ लिखित स्वीकृति की परम्परा चली है।

कुछ दिनों के बाद जब दीवान श्री बादरमलजी भण्डारी आचार्यश्री के दर्शन के लिए आए तो जयाचार्य ने कहा—भण्डारीजी! तुमने शासन की बहुत बड़ी सेवा की है। यदि तुम सन्त होते तो तुम्हें युवराज पदवी देता, गुरु के मुख से ये शब्द सुनकर भण्डारीजी गद्‌गद् हो गए। उनकी प्रार्थना पर वि० सं० १९२१ का चातुर्मास जोधपुर किया। तीन वर्ष बाद ही १४ वर्ष की आयु में मुनिश्री मुनिपत का स्वर्गवास हो गया।

## आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रथम पुरस्कार

श्री सूरजमलजी बैंगानी श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे। आचार्यश्री तुलसी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। तेरापंथ शासन की सेवा के लिए वे अर्द्धरात्रि में भी जगे हुए थे। इतिहास उनकी सेवाओं को कभी नहीं भुला सकता। जोधपुर राज्य में तेरापंथी साधुओं को आदालत में उपस्थित न होने का आदेश उनके ही प्रयत्नों का फल है। उनकी अनेक सेवाओं से प्रसन्न हो आचार्यश्री तुलसी ने १९९६ के माघ महोत्सव के अवसर पर अगला चातुर्मास उन्हें लाडनूँ का देकर पुरस्कृत किया। ६ मास पूर्व चातुर्मास की घोषणा का यह पहला ही

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अवसर था। उस वर्ष लाडनूँ की चाकरी के चौमासे की घोषणा भी पीछे हुई।

# प्रतिलिपि

नं० २७०|s

तमाम दीवानी, फौजदारी और रेवेन्यू अदालतों की रहनुमाई के लिए यह हुक्म दिया जाता है कि चीफ मिनिस्टर की मंजूरी लिए वगैर कोई तेरापंथी साधु व साध्वी न तो गिरफ्तार किया जावे और न गवाह के हैसियत से तलब किया जावे और न कोई कमीशन उनके बयान कलम बन्द करने के लिए जारी किया जावे, इन साधुओं के न कोई जायदाद है और न कोई मुस्तकिल सकूनत होती है, ये दुनियां के कारोबार में कुछ दिलचस्पी नहीं लेते और इनके धर्म के असूलों के माफिक यह साधु न तो किसी जुडिशियल कार्रवाई में किसी तरह हिस्सा ले सकते हैं न शहादत लेने से कोई मकसद हल नहीं होता और न आम तौर पर उनको मुलजिम करार देकर अदालत में तलब करने की जरूरत पेश आ सकती है, जब तक कि यह लोग अपने मौजूदा रहन-सहन की पूरी तौर से पाबन्दी रखते हैं।

*Dated 17th January 1940.* **D. M. FIELD.**

*Chief Minister*

GOVT. OF JODHPUR

## भक्त की गुरु भी सुनते हैं।

नाथद्वारा के श्रावक श्री शोभजी चोरड़िया स्वामीजी के अनन्यतम श्रावक थे। उन पर राजकीय कर चुराने का मिथ्या आरोप लगाकर उन्हें जेल भेज दिया और हाथों व पैरों में बेड़ियां डाल दी गई, इतना होने पर भी सत्य के प्रति उन्हें पूर्ण विश्वास था। जेल में बैठे-बैठे ही वे इस पद्य को गुणगुणाने लगे—

'स्वामीजी के दर्शन किस विधि होय'

यह देख उन्हें महान आश्चर्य हुआ कि स्वामीजी जेल के फाटक के सामने खड़े हैं। उन्हें देखकर वे हर्ष विभोर हो गए। हाथों पैरों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की बेड़ियाँ टूट गईं। प्रहरी ने अपने अधिकारी के पास जाकर सारा वृतान्त कह सुनाया। अधिकारियों ने उन्हें सत्यवादी समझकर तुरन्त छोड़ दिया।

## राणाजी घबराए

वि० सं० १८७५ में आचार्य भारमलजी उदयपुर में थे। वर्षा होने में कुछ विलम्ब हो गया। कई सज्जन भाइयोंने प्रकृति के दोष को आचार्य भारमलजी पर थोप दिया। गाँव में फैलाया कि तेरा-पंथी साधु भारमलजी वर्षा को रोके बैठे हैं। वर्षा में वे भिक्षा लाने नहीं जा सकते इसलिए वर्षा को बन्द कर दिया है। बात बढ़ती-बढ़ती राणा भीमसिंहजी के कानों तक पहुँची और द्वेषियों ने उन्हें यह भी समझाया कि वर्षा के बिना जनता तड़प रही है। यदि साधुओं को शहर से बाहर निकाल दें तो वर्षा हो जाय। राणा ने भी बिना सोचे - समझे तत्काल निर्णय दिया कि उनको शहर से बाहर निकाल दें।

आचार्यश्री भारमलजी स्वामी के उदयपुर छोड़ने के बाद शहर में बीमारी फैल गई। और बड़ी संख्या में लोग मरने लगे। राणाजी का एक पुत्र और जवाई भी रोग के शिकार बन गये ऐसी स्थिति देख राणाजी घबरा उठे। ठीक अवसर पर श्रावक केशरजी जो उस समय तक प्रच्छन्न तेरापंथी थे—सामने आए। उन्होंने सोचा मेरे गुरुको बाहर निकाल दिया है। अब मैं गुप्त रहकर क्या करूँगा। भण्डारीजी सीधे दरबार के पास पहुँचे। वे महाराणा के कृपापात्र थे। शब्दों के लपेट के बिना सीधी भाषा में कहा—धणियाँने भूंडी क्यों सूझी है?" राणाजीने पूछा क्यों केशर! इस्यों कांई हुओ। तब भंडारीजी ने कुछ नम्रता से कहा—अन्नदाता! अच्छे साधुओं को शहर से निकालकर आपने गले में आफत मोल क्यों ली? अभी तो बीमारी फैली है, कौन जाने आगे क्या हो जाय? राणाजी ने सोचा साधुओं को सताया गया था फल मिल रहा है। उनसे तत्काल क्षमा मांगनी चाहिए नहीं तो न जाने शहर की क्या दशा होगी? उसी क्षण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उन्होंने एक पत्र (रुक्का) लिखकर स्वामीजी से अपनी गलती को स्वीकार करते हुए शहर में वापस आने का नम्र निवेदन किया। वह पत्र इस प्रकार है—

## पत्र की प्रतिलिपि

श्री बाणनाथजी श्री एक लिंगजी श्रीनाथजी

स्वस्ति श्री साध श्री भारमलजी तेरापंथी साध थी राणा भीमसिंह की विनती मालुम हुए, कृपाकर अठे पधारोगा की दुष्ट व दुष्टाणों की दो जीं सामो नहीं देखोगा म्हा सामु वा नगर में प्रजा है ज्यांर, दया कर जैज न्ही करोगा, वती कांही लिखूं। और समाचार सहा सीवलाल का लीख्या जानोगा। सं० १८७५ वर्षे आषाढ़ बदि ३ शुक्रे।

राणाजी का नम्रता से भरा पत्र पढ़कर श्री भारमलजी स्वामी ने उपेक्षा दिखाई और उन्होंने उदयपुर जाना स्वीकार नहीं किया, राणाजी घबरा उठे। उन्होंने दूसरा पत्र फिर लिखा जो इस प्रकार है—

रुक्का नं० २

श्री बाण नाथजी श्री एक लिंगजी श्रीनाथजी

स्वस्ति श्री तेरापंथ साधश्री भारमलजी सूं म्हारी डण्डोवत् बंचे उपरंच आप अठै पधारसी जमा खात्रसों। आगे ही रुक्को दियो हो सो अबै बैगा पधारेगा, बैगा आवोगा, श्रीजीरो राज है सो सारां रो सीर है, जी थी सन्देह काहिं बी नहीं लावोगा। सं० १८७६ वर्षे पोष बदि ११

दूसरा पत्र लेकर दूत आया उस समय आचार्य भारमलजी राजनगर तक चले गए थे। आचार्य भारमलजी फक्कड़ प्रकृति के संत थे। उन्होंने रूखा सा उत्तर दिया—कुण जावे भाटा गुनतो (भाटो में जाकर कौन पग तोड़ें) राणाजी की ओर से भाइयों की अधिक प्रार्थना पर ऋषिरायजी महाराज को उदयपुर भेजा पर स्वयं नहीं गए।

उदयपुर में श्री ऋषिरायजी सं० १८७६ में पधारे। उस समय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जब सुबह व्याख्यान हो रहा था उस समय कुछ विरोधी छोटे-छोटे कंकड़ फेंक देते थे। एक दिन राणाजी ने भाण्डारीजी से पूछा—क्यों केशर! साधा न तकलीफ तो कोनी? तब भण्डारीजी ने कहा—अन्नदाता कुछ विरोधी व्याख्यान के समय कंकड़ फेंकते हैं। तो राणाजीने तुरन्त राज की ओर से गुप्तचर लगा दिए और हुक्म दिया कि जो ऐसा करे उसे पकड़कर मेरे सामने हाजर करो! दूसरे दिन एक ब्राह्मण के लड़के ने एक पत्थर फेंका जो ऋषिरायजीके कान के पास से निकल गया। पुलिस वाले ( गुप्तचर ) उस लड़के को फौरन पकड़कर राणाजी के पास ले गए। राणाजी ने सारा वृतान्त सुनकर उसे तोप के मुंह उड़ाने का हुक्म दे दिया। जनता ने उस लड़के को माफ करने के लिये बहुत अर्ज की मगर राणाजी ने किसी की नहीं सुनी। इधर ऋषिरायजी महाराज आदि सन्तों ने भण्डारीजी से कहा "म्हां खातिर इस्यो काम नहीं होनो चाहिजे।" भण्डारीजी ने सारी बात आकर राणाजी से कही। तब राणाजीने कहा—"केशर! सन्त नाराज होव इस्यो काम नहीं करां।" पण आज पछै इस्यो काम कोई करेला तो छोडूं नहीं एक लिंगजी की आण है।

## खोड़ा अपने आप टूट गया

श्री रूपांजी रावलिया (मेवाड़) की थी और तृतीय आचार्य श्री ऋषिरायजी की संसार पक्षीय मौसी थी। वह दीक्षा लेना चाहती थी पर घर वाले देना नहीं चाहते थे। आज्ञा के लिए रूपांजी के अधिक आग्रह पर एक दिन घर वालों ने उसके दोनों पैर खोड़े(वि० सं०१८४८) में दे दिए। इधर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक खोड़ा नहीं टूटेगा तब तक अन्नजल (भोजन) ग्रहण नहीं करूँगी। वह आत्मविश्वास के बल पर चलती रही। आखिर २१वें दिन खोड़ा अपने आप टूट गया। घर वालों को आश्चर्य की सीमा न रही। अन्त में उन्होंने राणाजी को पत्र लिखा। जिसमें इस सत्य के चमत्कार का भी उल्लेख था और उनसे प्रार्थना भी की गई कि इसकी दीक्षा पर प्रतिबन्ध लगाएं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पत्र पढ़ते ही राणाजी प्रभावित हो गए। उन्होंने सोचा—जिसके आत्मबल से खोड़ा ही टूट गया उसकी दीक्षा को कैसे रोका जा सकता है ? तत्काल राणाजी ने आदेश पत्र भेजकर कहा कि पत्र पढ़ते ही बहन को दीक्षा दे दो। अतः वि० सं० १८४८ को दीक्षा सम्पन्न हो गई।

## मौखिक परम्परा से—किन्तु सत्य

मुनिश्री वैणीरामजी को वि० सं० १८७० में (चासटू जयपुर) एक यति ने द्वेष वश औषधि में विष दे दिया।

वि० सं० १९७२ बीकानेर में आचार्यश्री कालुगणी को मारने के लिए विरोधियों की प्रेरणा से एक मुसलमान पिस्तौल लेकर छिप गया जहां वे प्रतिदिन शौच भूमि में जाते थे। उनके दिव्य तेज को देखते ही उसकी भावना बदल गई और उसके हाथ से पिस्तौल गिर पड़ी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# तेरापंथ के पूर्ववर्ती आचार्यों का संक्षिप्त परिचय

| क्रम संख्या | आचार्यों का नाम | जन्म-स्थान | जन्म | दीक्षा | युवराज-पद | आचार्य-पद | आचार्यों द्वारा दीक्षित सन्त | साध्वियाँ | निर्वाण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | श्री भिक्षु गणी | कण्टालिया | १७८३ | १८१७ | — | १८१७ | ४९ | ५६ | १८६० |
| २ | श्री भारीमाल गणी | महुआ | १८०३ | १८१७ | १८३२ | १८६० | ३८ | ४४ | १८७८ |
| ३ | श्री रायगणी | बड़ी रावलिया | १८४७ | १८५७ | १८७७ | १८७८ | ७७ | १६८ | १९०८ |
| ४ | श्री जयगणी | रोयट | १८६० | १८६९ | १८९३ | १९०८ | १०५ | २२४ | १९३८ |
| ५ | श्री मघवागणी | बीदासर | १८९७ | १९०८ | १९२० | १९३८ | ३६ | ८३ | १९४९ |
| ६ | श्री माणकगणी | जयपुर | १९१२ | १९२८ | १९४९ | १९४९ | १६ | २४ | १९५४ |
| ७ | श्री डालगणी | उज्जैन | १९०९ | १९२३ | — | १९५४ | ३६ | १२५ | १९६६ |
| ८ | श्री कालूगणी | छापर | १९३३ | १९४४ | १९६६ | १९६६ | १५५ | २५५ | १९९३ |

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

# तेरापंथ संघ की प्रमुखा और अग्रणी महासतियों का परिचय

( साध्वी संघ की सुव्यवस्था के लिए आचार्य द्वारा नियुक्त व अपने समय की प्रमुख )

| क्रम संख्या | साध्वी प्रमुखा | जन्म-स्थान | जन्म-सम्वत् | दीक्षा | उपाधि | कबसे | विशेषण किसके द्वारा | स्वर्गारोहण कब | कहाँ | कैसे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | श्री कुशलांजी | मेवाड़ | — | १८२१ | प्रमुखा | १८२१ | आ० भिक्षु | — | गुंदोच | सर्पदंश से |
| २ | श्री बरजूजी | बड़ीपादू | — | १८५२ | „ | | „ „ | — | ईड़वा | संथारा |
| ३ | श्री हीरांजी | पंचपदरा | — | १८४४ | „ | | आ० भारीमालजी | १८७८ | — | „ |
| ४ | श्री दीपांजी | जोजावर | १८५६ | १८७२ | „ | | आ० ऋषिरायजी | १९१८ | आमेट | „ |
| ५ | श्री सरदारांजी | चूरू | १८६५ | १८९७ | अग्रणी | १९१४ | आ० जयाचार्यजी | १९२७ | बीदासर | „ |
| ६ | श्री गुलाबांजी | बीदासर | १९०१ | १९०८ | „ | १९२७ | आ० जयाचार्यजी | १९४२ | जोधपुर | „ |
| ७ | श्री नौलांजी | रामसिंह का गुढा | १८८५ | १९०४ | „ | १९४२ | आ० मघवागणी | १९५५ | बीदासर | „ |
| ८ | श्री जेठांजी | चूरू | १९०१ | १९१९ | „ | १९५५ | आ० डालगणी | १९८१ | राजलदेसर | „ |
| ९ | श्री कानकंवरजी | श्री डूँगरगढ़ | १९३० | १९४४ | „ | १९८१ | आ० कालूगणी | १९९३ | राजलदेसर | „ |
| १० | श्री झमकूजी | थेलासर | १९४४ | १९६५ | „ | १९९३ | आ० कालूगणी | २००३ | शार्दूलपुर | „ |
| ११ | श्री लाडांजी | लाडनँ | १९६० | १९८२ | „ | २००३ | आ० तुलसीगणी | व र्त | मा | न |

# तेरापंथ के वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी की जीवन झांकी

| क्रम | क्या | कब | कहांसे |
|---|---|---|---|
| १ | जन्म | १६७१ कार्तिक शुक्ला १२ | लाडनूँ |
| २ | दीक्षा | १६८२ पौष कृष्ण ५ | लाडनूँ |
| ३ | युवाचार्य | १६६३ भाद्र शुक्ला ३ | गंगापुर |
| ४ | आचार्य पदारोहण | १६६३ भाद्र शुक्ला ६ | गंगापुर |
| ५ | अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन | २००५ फा० शुक्ला २ | सरदारशहर |
| ६ | लाडनूँ स्थिरवास समारोह | २०१४ | लाडनूँ |
| ७ | नया मोड़ (सामाजिक रूढ़ियों के प्रति) | २०१७ | राजनगर |
| ८ | द्विशताब्दी समारोह | २०१७ | राजनगर |
| ६ | भावात्मक एकता अभियान | २०१८ | गंगाशहर |
| १० | धवल समारोह | २०१८ | बीदासर |
| ११ | उपासक संघ | २०२० | लाडनूं |

## महान् परिव्राजक आचार्यश्री तुलसी की पद यात्रा

| यात्रा | कहां से कहांतक | दिन | मील | संवत् |
|---|---|---|---|---|
| जयपुर | छापर से जयपुर | ५१ | २३० | २००६ |
| पंजाब | जयपुर से हांसी | ८६ | ५०० | २००७ |
| दिल्ली | हांसी से दिल्ली | ७५ | ५७० | २००८ |
| राजस्थान | दिल्ली से सरदारशहर | ३२ | ३५० | २००६ |
| राजस्थान | सरदारशहर से जोधपुर | ६५ | ४५० | २०१० |
| बम्बई | जोधपुर से बम्बई | ११८ | १००० | २०११ |
| मध्यप्रदेश | बम्बई से उज्जैन | १०६ | ८६० | २०१२ |
| राजस्थान | उज्जैन से सरदारशहर | ७६ | ७८० | २०१३ |
| राजस्थान | सरदारशहर से सुजानगढ़ | ३५ | ५६० | २०१४ |

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

| यात्रा | कहां से कहांतक | दिन | मील | संवत् |
|---|---|---|---|---|
| उत्तरप्रदेश | सुजानगढ़ से कानपुर | ११० | ६७० | २०१५ |
| बंगाल | कानपुर से कलकत्ता | ७० | ८३० | २०१६ |
| राजस्थान | कलकत्ता से दिल्ली-सरदार-शहर-राजनगर | १७८ | २००० | २०१७ |
| राजस्थान | राजनगर से बीदासर | १२४ | ८७५ | २०१८ |
| राजस्थान | बीदासर से उदयपुर | १०८ | ७६० | २०१६ |
| राजस्थान | उदयपुर से लाडनूँ | १०३ | ६३५ | २०२० |

## आचार्यश्री तुलसी के चातुर्मास और माघ महोत्सव

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | १६६३ | गंगापुर | ४७५ | व्यावर | ३५८ |
| २ | १६६४ | बीकानेर | ४८० | गंगाशहर | ३४६ |
| ३ | १६६५ | सरदारशहर | ४६५ | रतनगढ़ | ४३३ |
| ४ | १६६६ | बीदासर | ५२१ | सरदारशहर | २५२ |
| ५ | १६६७ | लाडनूँ | ५४३ | लाडनूँ | ५०३ |
| ६ | १६६८ | राजलदेसर | ५३६ | सरदारशहर | ४७० |
| ७ | १६६६ | चूरू | ५६२ | श्रीडूंगरगढ़ | ५१६ |
| ८ | २००० | गंगाशहर | ५७४ | गंगाशहर | ५२६ |
| ६ | २००१ | सुजानगढ़ | ५६६ | सुजानगढ़ | ५२६ |
| १० | २००२ | श्रीडूंगरगढ़ | ६१५ | सरदारशहर | ५४७ |
| ११ | २००३ | राजगढ़ | ६२१ | चूरू | ५८६ |
| १२ | २००४ | रतनगढ़ | ६३५ | बीदासर | ५५० |
| १३ | २००५ | छापर | ६३७ | राजलदेसर | ५७२ |
| १४ | २००६ | जयपुर | ६३३ | जयपुर | ५०२ |
| १५ | २००७ | हांसी (पंजाब) | ६३२ | भिवानी | ४७८ |
| १६ | २००८ | दिल्ली | ६३६ | सरदारशहर | ३६६ |
| १७ | २००६ | सरदारशहर | ६४१ | सरदारशहर | ५३३ |
| १८ | २०१० | जोधपुर | ६५७ | राणावास | ४५१ |

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १६ | २०११ | बम्बई | ६६० | बम्बई | १२५ |
| २० | २०१२ | उज्जैन | ६५७ | भीलवाड़ा | ४५० |
| २१ | २०१३ | सरदारशहर | ६४४ | सरदारशहर | ५१७ |
| २२ | २०१४ | सुजानगढ़ | ६४१ | लाडनूँ | ५१४ |
| २३ | २०१५ | कानपुर | ६४८ | सैंथिया | ६१ |
| २४ | २०१६ | कलकत्ता | ६४८ | हांसी | १३१ |
| २५ | २०१७ | राजनगर | ६५५ | आमेट | ४८० |
| २६ | २०१८ | बीदासर | ६४५ | भीनासर | ४०७ |
| २७ | २०१६ | उदयपुर | ६४१ | राजनगर | ३२४ |
| २८ | २०२० | लाडनूँ | ६४६ | लाडनूँ | |

## दीर्घ तपस्वी संतों की चमत्कारिक तपश्चर्या

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ मुनि श्री अनोपचन्दजी | १६०६ | सवा छवमासी | एक |
| ,, ,, | १६१० | साढ़े छवमासी | एक |
| ,, ,, | १६११ | छवमासी | एक |
| ,, ,, | १६१२ | सवा सातमासी | एक |
| ,, ,, | १६१५ | साढ़े छवमासी | एक |
| २ मुनि श्री हीरजी | १८८२।८५ | छवमासी | दो |
| ३ मुनि श्री पीथलजी बड़ा | १८८३ | छवमासी | एक |
| ४ मुनि श्री वर्द्धमानजी | १८८३ | छवमासी | एक |
| ५ मुनि श्री कोदरजी | १८८४ | छवमासी | एक |
| ६ मुनि श्री शिवजी | १८८६ | छवमासी | एक |
| ७ मुनि श्री दीपजी | १८८६ | छवमासी | एक |
| ८ मुनि श्री मोड़जी | १६१२ | छवमासी | एक |
| ६ मुनि श्री मोतीजी(बाघावास) | — | छवमासी | एक |
| १० मुनि श्री खूबजी (ताल) | — | छवमासी | एक |
| ११ मुनि श्री चौथमलजी (पुर) | १६५६ | छवमासी | एक |
| १२ मुनि श्री रणजीतमलजी | १६६८ | छवमासी | एक |

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

| | | | |
|---|---|---|---|
| १३ मुनि श्री हुलासमलजी | १९९६ | लघुसिंह तप की पहली, तीसरी सम्पूर्ण, चौथी परिपाटी में ३२ दिन पूर्व ही स्वर्गवास। | |
| १४ मुनि श्री वृद्धिचन्दजी ( बांगोरवाला ) | २००१ | रत्नावली तप | एक |
| १५ मुनि श्री सुखलालजी | २०१६ | भद्रोत्तर तप | एक |

पुनश्च :-रत्नावली तप में १५ मास २२ दिन लगते हैं, जिस में ८० पारणे होते हैं। भद्रोत्तर तप में २०० दिन लगते हैं, जिस में २५ दिन आहार लेते हैं।

# दीर्घ तपस्विनी सतियों की तपश्चर्या

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | साध्वीश्री जैतांजी ( ताल ) | १९१२।१४।१५ | छवमासी | तीन |
| | ,, ,, ,, | १९२० | साढ़े छवमासी | एक |
| २ | साध्वीश्री ज्ञानांजी | १९१२ | छवमासी | तीन |
| ३ | साध्वीश्री हस्तुजी | १९१२ | ,, | दो |
| ४ | साध्वीश्री रम्भाजी (पदराड़ा) | १९४३ | ६॥ ६। ६ ४॥। मासी | चार |
| ५ | ,, मुखांजी ( सुजानगढ़ ) | १९७८ | नवमासी | एक |
| ६ | ,, रम्भांजी | — | छवमासी | दो |
| ७ | ,, मलूकांजी | — | छवमासी | दो |
| ८ | ,, सुन्दरजी ( नाथद्वारा ) | — | ६/४ ५।/१ ४/१ मासी | छह |
| ९ | ,, भूमांजी ( सिरेवड़ी ) | — | ६/६ ४।/१ ४/१ | आठ |
| १० | ,, श्री अणचांजी (श्री डूंगरगढ़) | १९९६ | लघुसिंह तप चौथी परिपाटी सम्पूर्ण | |
| | ,, ,, ,, | २०१७ | चौमासी | एक |
| ११ | ,, भूरांजी | २०१५ | बारहमासी | एक |
| | ,, ,, | २०१८ | महाभद्रोतर तप | एक |
| १२ | ,, पन्नांजी ( देराजसर ) | २०१५-१७ | छवमासी चौमासी | दो |

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १३ | ,, मीरांजी | २०२० | छवमासी चौमासी दो अमल | |
| १४ | ,, भत्तूजी | २०२० | छवमासी | एक |
| १५ | ,, इन्दुजी | २०१७ | चौमासी | एक |
| १६ | ,, पन्नांजी ( राजलदेसर ) | २०१७ | ,, | एक |
| १७ | ,, भत्तूजी ( सरदारशहर ) | २०१७ | ,, | एक |
| १८ | ,, पिस्तांजी | २०१७ | ,, | एक |

पुनश्च :—महा भद्रोत्तर तप में १४ मास २१ दिन लगते हैं ।

| क्रम | क्या | किससे | कब |
|---|---|---|---|
| १ | तेरापंथ का नामकरण | आचार्य श्री भिक्षु द्वारा | १८१७ जोधपुर |
| २ | सर्व प्रथम साध्वियों की दीक्षा ( कुशलांजी, अजबुजी, मट्टूजी की ) | ,, ,, | ,, १८२१ |
| ३ | तेरापंथ मर्यादा लिखी | ,, ,, | ,, १८३२ मार्गशीर्ष कृष्णा ७ |
| ४ | १४०० मील लम्बा विहार | ,, ,, | ,, १८३६ |
| ५ | कुमारी साध्वी श्री नंदूजी (लावा सरदारगढ़ की दीक्षा) | ,, ऋषिरायजी | ,, १८७३ |
| ६ | लम्बा विहार १४०० मील | ,, जयाचार्य | ,, १८८६ |
| ७ | हाजिरी प्रारम्भ | ,, ,, | ,, १६१० पौष कृ० ६ रावलिया में |
| ८ | आहार पानी की पांती | ,, ,, | ,, १६१० भाद्र शुक्ला १३ |
| ९ | पट्टोत्सव का प्रारम्भ | ,, ,, | ,, १६११ माघ शुक्ला १५ इन्दौर |
| १० | चरमोत्सव का प्रारम्भ | ,, ,, | ,, १६१३ भाद्र शुक्ला १३ |
| ११ | मर्यादा महोत्सव का प्रारम्भ | ,, ,, | ,, १६२१ माघ शुक्ला ७ बालोतरा से |

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

| | | |
|---|---|---|
| १२ | महावीर प्रार्थना | आचार्य श्री तुलसी द्वारा २००१ बीदासर से |
| १३ | अणुव्रत प्रार्थना | ,, ,, ,, २०११ |
| १४ | आहार पानी की परम्परा में परिवर्तन | ,, ,, ,, २०१७ |

## साहित्य प्रगति

—आचार्य श्री भिक्षु ने १०० ग्रन्थों में ३८ हजार पद्यों की रचना की।

—आचार्य श्री जयाचार्य ने भगवती जोड़ आदि ग्रन्थों में ३ लाख पद्यों की रचना की।

—आचार्य श्री जयाचार्य ने केवल ११ वर्ष की आयु में 'संत गुणमाला' की रचना की।

—आचार्य श्री जयाचार्य ने १८ वर्ष की आयु में पन्नवणा सूत्र की जोड़ प्रारम्भ की।

—आचार्य श्री जयाचार्य ने अंतिम आठ वर्षों में ( वि० सं० १९३० से १९३८ ) ८६६७४६० गाथाओं का स्वाध्याय किया।

—मुनि श्री कुन्दनमलजी ने वि० सं० १९७७ से ४९ इंच के पत्र में ८० हजार सूक्ष्म अक्षर बिना चश्में के कलम से लिखे।

—श्रावक गुमानजी लूणावत ने आचार्य श्री भिक्षु के सभी ग्रन्थों को धार कर लिपिबद्ध कलम से लिखे।

—भगवती सूत्र की रचना के समय श्री जयाचार्य आशुगति से बोलते और २० वर्षीया महासती गुलाबांजी उन्हें लिपिबद्ध करती, लेखन-स्फूर्ति, स्मरण-शक्ति और योग-स्थिरता का ही चमत्कार था कि किसी भी पद्य को दूसरी बार पूछने की आवश्यकता नहीं हुई।

—मंत्री मुनि श्री मगनलालजी अपने १७ वर्ष के जीवन में केवल २ महीने पढ़े जिसमें १२ आने खर्च हुए।

—श्री जयाचार्य ने भगवती जोड़ की रचना ५ वर्षों में ( वि० सं० १९१९-१९२४ पौष शुक्ला १० ) परिसमाप्त की।

—महासती सरदारांजी ने एक दिन में २०० पद्य कंठस्थ किए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# क्या आप जानते हैं ?

—तेरापंथ में वैश्यजाति ( ओसवाल, अग्रवाल, सरावगी, पोरवाल, श्रीमाल आदि ) के अतिरिक्त दो स्वर्णकार (श्री ओटोजी, श्री उदांजी ) और एक कुंभकार ( श्री वीराजी दड़ीकावासी ) भी दीक्षित हुए।

—श्री जयाचार्य वि० सं० १९३६ में लाडनूँ से जयपुर ( १६० मील ) चार संतों द्वारा सुखपाल में गए ।

—शरीर की अस्वस्थता के कारण कई साध्वियां सुखपाल से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाई गई।

—मुनि श्री बेणीरामजी को वि० सं० १८६६ में रतलाम में ३ दिन में ९ स्थान बदलने पड़े।

—द्वितीयाचार्य श्री भारमलजी ने वैरागी वर्द्धमान को वैराग्य की उत्कण्ठा के कारण ( १८७७ ) अर्द्धरात्रि में दीक्षा दी थी।

—साध्वी प्रमुखा सरदारांजी जब साधुओं के स्थान पर आती तो सन्त खड़े होकर उनका स्वागत करते तथा लुंकार (आसन) देते।

—साध्वी श्री नन्दूजो ( वि० सं० १८७३ ), मुनि श्री जीवोजी (१८८०), मुनि श्री हरकचन्दजी (१९०२) और मुनि श्री अभयराजजी (१९३७) की दीक्षा गहने-कपड़े सहित गृहस्थ-वेष में हुई थी। बाद में गृहस्थ के कपड़े-गहने आदि उनके अभिभावकों को वापस दे दिए गये।

—मुनि श्री वृद्धिचन्दजी (सुरवाला) ऐसे दीर्घकाय संत थे जिनकी कमर ६० इञ्च और जंघा करीबन २५।३० इञ्च मोटी थी। (मानक-महिमा)

—घोर तपस्वी मुनि श्री सुखलालजी ने ( २०१५ ) में १८० दिन तक आहार तो किया किन्तु पानी नहीं पिया।

—बीदासर में वि० सं० १९१४ कार्तिक शुक्ला १० की रात्रि को देव उपद्रव से श्री जयाचार्यको छोड़ सभी संत मूर्छित हो गए थे।

—श्री जयाचार्य के शासनकाल में एक बार महासतियांजी ने बीहड़ जंगल को पार किया। उस समय उनके साथ कासीद न होने के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कारण एक सन्त ने मुखपती खोलकर अपने माथे पर फेंटे की तरह कपड़ा लपेटकर कासीद का काम किया।

—मुनि श्री चुन्नीलालजी ने अपने जीवन में ८००० दिन की तपस्या की थी।

—श्री जयाचार्य के बरतारे में ताराचन्दजी व जीवराजजी दो सन्तों ने नागौर से विहार किया। रास्ते में मुनिश्री ताराचन्दजी देवलोक हो गए। मुनि श्री जीवराजजी अस्वस्थ अवस्था में खालर गांव में साध्वी श्री मंगाजी आदि साध्वियों के नेश्राय में २७ दिन तक रहे।

—आज तक ( सं० २०२० कार्तिक शुक्ला१५ ) तेरापंथ संघ में १६६७ दीक्षाएं हुई जिसमें ६७६ सन्त एवं १३२१ साध्वियां थीं।

—आज तक शासन से अलग हुए सन्तों की २०७ और साध्वियों की ५४ संख्या है।

## मानो या न मानो

—आचार्य भिक्षु से लेकर तृतीयाचार्य श्री ऋषिरायजी तक सन्त सतियां सहज उपलब्ध दीपक के प्रकाश में पढ़ते थे और दिन में पहनने वाले वस्त्रों को छोड़ शेष कपड़े साबुन से धोते थे।

—आचार्य भिक्षु के समय में काली चौकड़ी का कम्बल ओढ़ते थे।

—रात्रि में कैंची, सुई और चाकू पास रखने की परम्परा थी जिसे तृतीयाचार्य श्री ऋषिरायजी ने बन्द करा दिया।

—आचार्य श्री ऋषिरायजी के समय तक छिलके सहित आम की फांक व भुट्टा ( मक्का टूंडके सहित ) लेते थे।

—बादाम की गुली नोक सहित, मतीरा का पानी, और मोथिया लेते थे।

—उठाऊ चूल्हा ( बिना लिपा हुआ ) से आहार लेते थे।

—साधुओं के बैठने के मकान में बिखरे धान्य के दानों को अजयणा की सम्भावना से साधु एक स्थान पर रख देते थे।

---

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ओसवाल प्रेस
कलकत्ता

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust